५ ३॥ - 63

विहार दिग्दर्शन

(प्रथम भाग)



संपादकः

मुनि प्रियंकरविजय

प्रकाशकः—
शा. सोमचंद डैशिंगदास
मेहसाना (गुजरात)

मुद्रकः—
शेठ देवचंद दामजी
श्री आनंद प्रिन्टींग प्रेस—भावनगर. (काठियावाड)

दाम. १-१०-०
प्रथमावृत्ति.
संवत् १९९२.



मुनिराजश्री प्रियंकरविजयजी

किञ्चित्

गुजराती में एक कहावत प्रचलित है कि—

" जीव्यापे जोयुं भलुं " उस कहावत को जितनी साधु-मुनिराज चरितार्थ कर सके उतना गृहस्थ नही, सबब मुनिराजों का पैदल ही भ्रमण होता है।

जैसे साधु-मुनिराज पैदल भ्रमण करते है वैसे अवतारी पुरुष भी करते थे, मगर इन दोनु के भ्रमण में बहूत ही अन्तर माना गया है।

अवतारी पुरुष तो अगर भ्रमण नही करते तो भी चल सकता, सबब कि वो अपने ज्ञानद्वारा सारी आलम को देख सकते थे मगर भ्रमण का उद्देश था विचारों का आन्दोलन, और अपन छद्मस्थों का होता है उन्ही महा-पुरुषों के विचारों का आन्दोलन और दून्यवी यात्रा।

दून्यवी यात्रा में साधु मुनिराज और गृहस्थों को किसी प्रकार की तकलीफ पेश न हो उसी उद्देश से यह विहार दिग्दर्शन नामक छोटीसी पुस्तक रचकर उन्हीं महापुरुषों की सेवा में समर्पित कि जाती है कि जो निरन्तर दून्यवी यात्रा करने की खायश रखते हो।

अन्तमें इस पुस्तक कि रचनामें मुझे जिन २ पुस्तक से सहाय मीली है उनके सभी लेखक महाशयों का आभार मानता हूं।

—प्रियंकरविजय

शुद्धि पत्रक

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
९	१८	मर्तियां	मूर्तियां
१४	२०	कालमेरु	कालभेरु
२४	१४	सिंधुदेश	सिंधु सौवीर देश
२४	१४	सौवीरदेश	सुरसेनदेश
२४	१९	सुरशेनदेश	बंगदेश
३२	६	वळा	X वळा
७०	८	आत्मारक्षा	आत्मरक्षा
९६	१४	आबूराड़	आबूरोड
१०३	२२	नराड़ा	नरोड़ा





बॉम्बे

टु

आग्रा (आग्रा रोड)



विहारदिग्दर्शन



मुनिराज श्री प्रियंकरविजयजी

LUHAR PRINTERY, AHMEDABAD



बॉम्बे (पायधूनी से) शाहपुर माईल ५५ (देश दक्षिण

देखो नोंध न	गावके नाम	माईल	श्रावक के घर	मंदिर	उपाश्रय
१	भायखला	१॥	३०	१	१
२	कुर्ला	६॥	२०	१	१
३	घाटकोपर	५	१००	१	१
४	भाँडुप	५॥	१५	१	१
५	ठाणा	५॥	४०	१	१
६	भीमड़ी	१०	३०	१	१
७	परघा	९	०	० डाक बंगला	
८	शाहपुर	१२	३०	१	१

नोंध नं.

बॉम्बे पायधूनी—बॉम्बे हिंदुस्तान का बड़ा भारी शहर है और उस के चारा स्टेशन है। पायधूनी बॉम्बे का मध्य भाग है। यहाँ पर गोड़ीपार्श्वनाथ भगवान का सारे बॉम्बे में दर्शनीय मंदिर है, मंदिर के पीछे बडा उपाश्रय, व्याख्यानशाला, जैनपाठशाला. जैन कन्याशाला और स्त्रियों का उपाश्रय है और मन्दिर के नीचे पेढी और यती का उपाश्रय है। गोड़ीजी का उपाश्रय, लालबाग का उपाश्रय और पायधूनी के चोक में बनी हुई आदीश्वर भगवान की धर्मशाला ये तीन बॉम्बे में बडे और खास उपाश्रय है। इस के अतिरिक्त और

सब मन्दिर में छोटे छोटे उपाश्रय है। जैन श्वेताम्बर यात्रालुओं को ठहरने के लिये लालबाग में बहुत बड़ी धर्मशाला है। अतिरिक्त कइ जैन संस्थाएँ है जैसे—श्री महावीर जैन विद्यालय, शेठ गोकुलभाई मूलचन्द जैन होस्टेल, श्री मोहनलालजी जैन सेन्ट्रल लायब्रेरी और संस्कृत पाठशाळा, बाबू पन्नालाल पूनमचन्द जैन हाईस्कूल और हॉस्पीटल, अखिल भारतवर्षीय जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स ऑफीस, जैन एसोसीएशन ऑफ इन्डिया, मांगरोल जैन सभा और जैन कन्याशाला, श्री शान्तिनाथ के मन्दिर में जैन पाठशाला, श्री आदीश्वर भगवान की धर्मशाला में जैन पाठशाला, शेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड ऑफीस, आगमोदय समिति ऑफीस, जैन एज्युकेशन बॉर्ड, जैन वॉलीन्टीयर कोर, जैन युवक मंडल, जैन सेनेटरी एसोशिएशन, बम्बइ जैन ओसवाल सोसायटी, श्री वीरतत्त्व प्रकाशक मंडल एडवाईझरी बॉर्ड, पालीताना जैन गुरुकुल ऑफीस, पालीताना जैन बालाश्रम ऑफीस आदि अनेक धार्मिक संस्थाएँ उनकी ऑफीसें, देश गाँव और कौम के हितकारी मंडल और उन के लगते धार्मिकखाते बहुत है। बम्बई शहर खास जैनपुरी है इस की खास डाइरेक्टरी किये विना सम्पूर्ण वर्णन नहीं लिखा जा सकता। जो बात जानने में आई वो लिखी है। यहां जैनों की वस्ती ४०—४५ हजार की प्रायः गिनी जाती है।

पत्ता—गौडीजी जैन उपाश्रय, पायधुनी, बॉम्बे.

पायधूनी, बॉम्बे.

पायधूनी से	कोलाबा	मा.	२॥	श्रा	घर	२५	म	१	उपा	१
,,	कोट	,,	१॥		,,	३००	,,	२	,,	१
,,	वालकेश्वर	,,	२॥		,,	२००	,,	३	,,	१
,,	माडवी बदर	,,	०॥		,,	५०००	,,	२	,,	१

बॉम्बे कोट में—श्री शान्तिनाथ भगवान और महावीर-स्वामी का मन्दिर मनोहर है। पास में एक ही मजल में उपाश्रय, व्याख्यानशाला, श्राविका उपाश्रय, पुस्तकालय और जैन पाठ-शाला है। यहा पर मागरोल वगैरह काठियावाड जैनों की वस्ती ज्यादा है। कोट बॉम्बे में प्रथम नंबर में गीना जाता है।

बॉम्बे मांडवी—कच्छी वीसा ओसवाल का और दशा ओसवाल के दो बडे मन्दिर और उपाश्रय है और दोनों ज्ञातियों की तरफ से अलग अलग जैन स्कूलें जोर से चलती है और कन्याशाला और कच्छी जैन एसोसिएशनादि है।

बॉम्बे से	पुना	माईल	११०
,,	सोलापुर	,,	२७०
,,	हैद्राबाद	,,	४६५
,,	आग्रा	,,	७४६

उपरोक्त स्थानो में पक्की सडक जाती है

बॉम्बे से रेल्वे लाइन का रास्ता रेल्वे गाइड पर से.

बॉम्बे से	सुरत	माईल	१६३
,,	अबाला	,,	१०२४

बॉम्बे से	सीमला	,,	११२४
,,	इन्दोर	,,	४७८
,,	बीकानेर	,,	७५६
,,	हैद्राबाद (सिंध)	,,	८७७
,,	भावनगर	,,	४६०
,,	देहली	,,	८४५
,,	मैसुर	,,	१०७१
,,	करांची	,,	९८८

(१) भायखला—यह बॉम्बे का हीस्सा है। यहां का स्टेशन भी है। यहांपर विक्टोरियागार्डन खास देखने योग्य है। उपरोक्त मंदिर मोतीशा शेठ का बनाया हूवा है। यहांपर चैत्री और कार्त्तिकी पूनम के दिन बहूत बड़ा मेला होता है। यहां पर प्रत्येक सोमवार को सारे बम्बई के जैन दर्शनार्थ आते है। यहां नजदीक में ही कीकाभाई प्रेमचंद रायचंद का बंगला है।

(२) कुर्ला—शहर और स्टेशन है।

(३) घाटकोपर—शहर और स्टेशन है। यहांपर एक ही कम्पाउन्ड में मन्दिर, धर्मशाला, पुस्तकालय और कन्याशाला है। यहांपर चित्रप्रेस खास देखने योग्य है।

पत्ता—**जैनश्वेतांबर मंदिर, घाटकोपर (बम्बई)**

(४) भाँडुप—गाँव और स्टेशन है। यहांपर एक ही स्थान

में जैनसेनिटेरियम, धर्मशाला और मन्दिर है। यहा से ठाणा जाते हूवे बीच में ३॥ मीलपर सडक से दाहिने हाथ पागलों की वहूत वडी होस्पीटल है जो भारत में प्रसिद्ध है।

(५) ठाणा—शहर और स्टेशन है। यहा से भीमडी जाते हूवे चार मील जा कर पाणी के नल के रास्ते से भीमडी जाना चाहिए। दो मील जाने के बाद फीर सडक मील जायगी क्यों की कोलसर की खाडी उतरनी न पडे। यहाँ से भइदर १४ मील

(६) भीमडी—शहर और स्टेशन है।

(७) परधा—गाँव और स्टेशन है।

(८) शाहपुर—शहर और स्टेशन है। यहापर शास्त्र-विशारद जैनाचार्य श्रीविजयधर्मसूरि महाराज के उपदेश से सस्थापित पाठशाला है। यहा से मुरवाड कचे रास्ते १९ मील और सडक से २९ मील होता है। वहा श्रीविजयधर्मसूरि जैन लायब्रेरी है (यहा से खरडी जाते हूवे बीच में रेल्वे फाटक आता है वहा से बाया हाथ की सडक तानसा के तालायपर १४ मील की गई। तालाव वहूत वडा है कि जिस से सारा बाँम्बे का पानी पुरा होता है। स्थान वहूत रमणिय है। यहा से इगत-पुरी तक कोई कोई जगह पहाड की वजह से जानवरों का खतरा रहता है)

पत्ता—शेठ नगीनदास हेमचन्द शाहपुर (दक्षिण)

शाहपुर से मालेगाँव माईल १२६ (देश कोंकण व दक्षिण)

दे. नों. नं.	गांव के नाम	माईल	श्रा. घर.	मंदिर.	उपाश्रय,
९	खरडी	१२	४	०	श्रा. घर
१०	कसारा	८॥	५	०	,,
११	इगतपुरी	११॥	९	०	,,
१२	०	१९	०	०	डाकबंगला
१३	नाशिक	१९	१९	३	१
	आडगाँव	६	स्था.५	०	चोरो
१४	पीपलगाँव	१३	८	१	१
१५	वडालीभोई	११	स्था.११	०	चावडी
१६	चांदवड	९॥	७	१	१
१७	संदाणे	१९	स्था.६	०	चावडी
१८	मालेगाँव	११॥	२९	१	१

(९) खरडी—गाँव और स्टेशन है।

(१०) कसारा—गाँव और स्टेशन है। यहां से इगतपुरी जाते हूवे बीच में बहूत वडा कसारा का पहाड आता है उस में से रेल्वेट्रेन पसार होती है। उस के भोंयरे खास देखने योग्य है। पहाड में नानाप्रकार की वनस्पतियें होती है, जानवरों का साधारण भय रहता है रास्ता चढाई और उतार का है।

(११) इगतपुरी—शहर और स्टेशन है।

(१२) ०—गाँव नही है। यहां से नाशिक जाते हुवे बीच में १० मीलपर सडक से दाहिने हाथपर बौद्धों की २४ गुफायें

पहाड के उपर हैं। पहाड में ही गुफा बनी हुई है। कई मूर्तियां भी है, यह गवर्मेन्ट के कब्जे में हैं।

(१३) नासिक—प्राचीन शहर और स्टेशन है। श्रीचंद्रप्रभ-स्वामी का प्राचीन जैनतीर्थ और हिन्दु का भी बडा तीर्थ है। यहापर एक जंगल है जिस को पंचवटी कहते हैं। उपरोक्त तीन मन्दिरों में एक गॉव के बाहर पेथापुरवाले के बगीचे में है। यहापर देखने योग्य कई स्थान मोजुद है। यहा से भगुर-कॅंप (देवलालीकी सडक गई मील ८

पत्ता—शेठ छगनलाल दामोदरदास नासिक (दक्षिण)

(१४) पीपलगॉव (बसवव)—गॉव बडा है। यहा नीफाड की माईल ११ की और वहा से येवला मील ३८ की सडक गई और वहा से औरंगाबाद आगे चली गई है।

(१५) वडालीभोई—गाव सडक से दाहिने हाथ एक फर्लांग दूर है।

(१६) चादवड—गाव बड़ा और प्राचीन है। गाव के चौतर्फ किल्ला है। यहा जैनपाठशाला और पुस्तकभंडार है। यहा से आधा मील दूर पहाडपर गुफा में जैनमन्दिर है। मूर्तिया पहाड में ही कोतर कर के बनाई हुई है। यहा से मनमाड मील १५ की सडक गई और वहा से येवला मील ३० की गई। यहां से संदाणे जाते समय पहाड की वजह से चडाव-उतार बहुत आता है। जानवरों का भी खतरा रहता है।

(१७) झोदाणे—यहां से मालेगांव जाते समय १३ मीलपर दो सडक आती है, उस में दाहिने हाथ की अहमदनगर को गइ और सीधी मालेगाँव ।

(१८) मालेगाँव—शहर है। जैन पाठशाला, पुस्तकालय, लायब्रेरी और श्रीसंघ का ज्ञानभंडार है। यहां से नांदगांव हो कर औरंगाबाद की ६२ मील की पक्की सडक गई ।

पत्ता—जैन श्वेताम्बर मन्दिर मु. मालेगांव (दक्षिण)

मालेगांव से शिरपुरवाघारी माइल ६३॥ (पश्चिम खानदेश)

हे.नों.नं.	गांव के नाम.	माईल.	श्रा. घर.	मंदिर.	उपाश्रय.
१९	चीकलवाड	९	०	०	डाक बंगला
२०	आरवी	११	०	०	,,
२१	धूलिया	११॥	१००	१	१
२२	नगाँव	४	१	०	चावडी
२३	सोनगीर	८ दिगं.	३०	१	गोविन्दमठ
२४	नरडाणा	८॥	०	०	जीन
२५	शिरपुरवाघारी	११॥	३५	२	१

(१९) चीकलवाड-गाँव सडक से १ मील दूर है।

(२०) आरवी-यहां से धूलिया जाते समय बीच में पहाडों की वजह से चढाव-उतार आता है।

×(२१) धूलिया-शहर और स्टेशन है। यहां जैल देखने योग्य है।

×धूलिया से अंमलनेर माईल २२॥ (पश्चिम व पूर्व खानदेश)

धूलिया से	आग्रा	माईल	९३६
,,	वम्बई	,,	२११
,,	अमलनेर	,,	२२
,,	पारोरा	,,	२२
,,	चालीसगाँव	,,	३३
,,	सुरत	,,	१७४ पक्की सडक जाती है।

पत्ता—शेठ सखाराम दूर्लभदास, धूलिया–प. खानदेश

(२२) नगाँव—यहा श्रावक का घर स्थायि नहीं है। यहां से सोनगीर जाते समय वीच में वाया हाथ की सडक नदूरबार गई।

(२३) सोनगीर—गॉव वडा और पुराना है। यहा पहाड के उपर किल्ला है उस में खास कोई देखने काविल चीज नहीं है।

(२४) नरदाणा—गॉव और स्टेशन है। यहा से शिरपुर-वाघारी जाते समय वीच में नदी आती है। पानी अधिक हो तो नाव से उतरना पडता है।

दे नों न	गाव के नाम	माईल	श्रा घर	मंदिर	उपाश्रय
	फागणा	४	१५	०	१
	चोपडा-कुडाला	७।	०	०	चावडी
	१ अमलनेर	११।	६०	१	१

नों न

(१) अमलनेर—शहर और स्टेशन है, यहां से चोपडा होकर जलगांव की सडक गई है।

पत्ता—चुनीलाल छगनलाल

मु अमलनेर. (पूर्व खानदेश)

(२५) शिरपुरवाघारी—गाँव वडा है। जैन लायब्रेरी, पाठशाला है। यहां से हाडाखेड कच्चे रास्ते से ८ मील होता है।

पत्ता—जैन उपाश्रय-शीरपुरवाघारी [खानदेश].

शिरपुरवाघारी से इन्दोर माईल १२४ (देश खानदेश व मालव)

दे. नों. नं.	गांवके नामः	माईल	श्रा घर.	मंदिर.	उपाश्रय.
२६	हाडाखेड	११।	०	०	०
	जमनीया	१३॥	०	०	०
२७	सींधवा	७॥	०	०	०
	जलवाणीया	१६	०	०	चावडी
	खुरमपुर	१४	१	०	जीन
२८	खलघाट	११।	०	०	०
२९	गुजरी	१३॥	दिगं. ३	०	चावडी
	मानपुर	१०	१	१	डाकबंगला
३०	महुकी छावनी	१३॥	१	२	धर्मशाला
३१	इन्दौर	१३॥	१५०	५	३

नों. नं.

(२६) हाडाखेड—यहां से जमनीया जाते हूवे बीच में सातपुडा का पहाड आता है उस की चढाई और उतार बहोत है। जानवरों का भी खतरा रहता है। वीच में बांया हाथ पर एक प्राचीन इमारत देखने काविल है।

(२७) सींधवा—गांव वडा और होल्कर स्टेट का है।

(२८) खलघाट—गाव छोटा है। यहां नर्मदा नदी बहुत बडी है, पुल बंधा हुवा है। यहां से गुजरी जावे हूवे ११॥ मील पर बाया हाथ की सडक धार मील ३० की गई और सीधी गुजरी।

(२९) गुजरी—गाव छोटा है। यहा से मांडवगढ का ७॥ माईल का कचा रास्ता और २॥ मीलकी पक्की सडक है। यहां से माडवगढ जावे हूए गुजरी के निकट में ही नदी और आगे धार की सडक पार करके दो माइल जाने के बाद १॥ माइल का पहाड का चढाव और चार माइल पहाडी सीधा रास्ता आता है। फिर सडक आती हैं इस में दाहिने हाथ की सडक माडवगढ जाती है। माडवगढ–यह पहले बहुत बड़ा शहर था लेकिन समय के प्रभाव से वह नाश होते होते आजकल केवल २९–३० मकान बाकी रह गये हैं। यह पहाड बहूत रमणीय है। यहा नाना प्रकार की वनस्पतिया होती है। सुपार्श्वनाथ भगवान का प्राचीन प्रसिद्ध तीर्थ हैं। इतिहास की दृष्टि से भी यह अद्वितीय और देखने योग्य स्थान है। जैसे–जुम्मामस्जिद, कटोरावावडी, चपावावडी, हिंडोला महल, भानुमती का महल इत्यादि कईएक स्थान देखने योग्य है। यहां से धार सड़क गई मील २२ और वहा से राजगढ गई मील २६। यहा से खानदेश में या इन्दोर जानेवालों को वापीस आना चाहिए। यहा से मानपुर तक बड़े बड़े पहाड़ आते है। जानवरों का भी खतरा रहता है।

पत्ता—जैन श्वेताम्बर मन्दिर मु. मांडवगढ (जी.धार)

(३०) महूकी छावनी—शहर और स्टेशन है। स्टेशन के उपर काच का कारखाना देखने योग्य है। यहां से बदनावर, जावरा, मंदसोर हो कर नीमच की छावनी सडक गई माईल १६३ और वहां से चितोड हो कर अजमेर गई।

(३१) *इन्दोर—होल्कर सरकार की राज्यधानी का शहर है। स्टेशन है। यति श्रीमाणेकचन्दजी के पास पुस्तको का भण्डार है। मोहनलालजी जैन ग्रंथमाला है। यति श्रीमाणेकचन्दजी का बगीचा है इस में ११ गणधर के और दूसरे मिल कर वीस

---

* इन्दौर से उज्जैन माइल ३१ देश (मालवा)

दे. नो. नं.	गाँव के नाम.	माईल.	श्रा. घर.	मंदिर.	उपाश्रय
२	सामेर	१७	५	१	श्रा.घर
३	उज्जैन	१४	७५	१४	२

नोंघ नं.

(२) सामेर—गांव वडा और स्टेशन है।

(३) उज्जैन—प्राचीन शहर और स्टेशन है। अवन्ति पार्श्वनाथ भगवान का तीर्थ है। हिन्दूओं का भी बहूत बडा तीर्थ है। जैनपाठशाला, दादावाडी, आनन्दवर्धक मंडल, विजयधर्मसूरि जैन ग्रंथमाला इत्यादि जैन संस्थाएं है। घटीयंत्र, सिद्धवड, भर्तृहरी गुफा, कालमेरु, अंकपात, कालीयादेह महल, महाकालेश्वर का मंदिर (जो पहिले जैनमन्दिर था जहां से सिद्धसेनदिवाकरसूरिने कल्याणमन्दिर की रचना कर शिवलिंग फोड़ कर पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति प्रकट थी) आदि कई देखने लायक और इतिहास की दृष्टि से भी अनुभव करने लायक स्थान विद्यमान है।

चरण युगल है। सुन्दरवाई जैनकन्याशाला है । यहापर हूकमचन्द जैन दिगंवर मदिर देखने योग्य है ।

इन्दौर से नीमच की छावनी	माईल	१६३	
,, वॉम्बे	,,	३७१	
,, आग्रा	,,	३७८	
,, देपालपुर	,,	२३	
,, धार	,,	३७	
,, उज्जैन	,,	३२	पक्की सडकें हैं।

पत्ता—शेठ नथमलजी गंभीरमलजी
C/o सराफा वाजार इन्दौर (मालवा)

इन्दोर से व्यावरा माईल ११३॥ (देश मालवा)

दे नों न	गाव के नाम	माईल,	श्रावक के घर	मदिर,	उपाश्रय
	मागल्या	८॥	०	०	सराय
	सीपरा	६॥	०	०	जीन
३२	देवास	६।	१२	२	२

उज्जैन से	आगर	माइल	४२	
,,	देवास	,,	२६	
,,	इन्दौर	,,	३२	
,,	मक्षी	,,	२४	
,,	भोपाल	,,	११६	
,,	वडनगर	,,	२८	पक्की सडके है ।

पत्ता—शेठ दीपचन्दजी वांठिया
C/o नमकमंडि उज्जैन (मालवा)

३३	शिया	९॥	५	१	०
३४	मक्षी	१६॥	२९	१	१
३९	शाजापुर	१६	३५	१	१
३६	सारंगपुर	१६	६	१	१
	उदनखेडी	१२॥	०	०	डाकबंगला
३७	पचोर	७।	०	०	सराय
	करणावास	८।	०	०	जीन
३८	ब्यावरा	१०	३	१	१

नों. नं.

(३२) देवास—दो पांति का स्टेट है। यहां से भोपाल मील ९२ और उज्जैन माइल २४ की पक्की सडक गई।

(३३) शिया—सडक से दाहिने हाथ एक फर्लांग दूर है।

(३४) ×मक्षी—गांव और स्टेशन है। यह प्राचीन तीर्थ है। मन्दिर के पीछे बगीचा है उस में पार्श्वनाथप्रभू–अभयदेवसूरि

---

*मक्षीजी तीर्थ से उज्जैन माइल २४ (देश मालवा)

दे. नों. नं.	गांव के नाम.	माइल.	श्रा. घर.	मंदिर.	उपाश्रय.
	दून्ता	३	७	१	श्रावक घर
	कायथा	५	१५	१	,,
४	ताजपुर	८	६	१	१
	उज्जैन	८	७५	१४	२

नो. नं.

(४) ताजपुर—गांव और स्टेशन है। यहां से तराणा पक्की सडक गई है।

तीर्थश्री "मक्षी"



पार्श्वनाथ प्रभू

महाराज के चरणों की देरिया है। यहा से उज्जैन सडक गइ मील २४ और सुजालपुर रेल्वे लाइन से मील ४० ।

(३५) शाजापुर—सडक से गाव वाया हाथ एक मील दूर है। गांव वड़ा है। यहा से वेरछा मील २२ की पक्की सडक गई है।

*मक्षीजी तीर्थ से सुजालपुरमंडी माईल ४० (देश मालवा)

देनों न.	गाव के नाम	माईल	श्रा घर	मंदिर	उपाश्रय
५	वेरछा	१३	३	०	श्रा घर
६	कालीसींध	७॥	०	०	,,
	मखावद	५॥	स्था २	०	कृष्णमंदिर
७	आकोदीया	५॥	१५	१	श्रा घर
८	सुजालपुर	८॥	६	१	१

नों न

(५) वेरछा—गाव और स्टेशन है। स्टेशन पें मन्डी है। यहा शाजापुरवाले लक्ष्मीचन्दजी के वहा ठहरना चाहिये। यहा से गाँव १॥ मील दूर है वहा श्रावक के १० घर हैं। यहा से शाजापुर पक्की सडक गइ है, मील १२ और वहा से बॉम्बे आग्रारोड।

(६) कालीसींध—गाव और स्टेशन है।

(७) आकोदीया—मंडी और स्टेशन है। यहा मे सारंगपुर पक्की सडक गई है, मील १७ और यहा से बॉम्बे आग्रारोड।

(८) सुजालपुरमंडी—गाव और स्टेशन है। यहा से सुजालपुर गाव मील २ होकर पचोर मील २४ की पक्की सडक गइ है और यहा से बॉम्बे आग्रारोड। गाव में श्रावक के १५ घर, १ मदिर और उपाश्रय है।

पत्ता—जैन श्वेताम्बर मंदिर
सुजालपुर मंडी (मालवा) भोपाललाइन

(३६) सारंगपुर—गांव वड़ा है। यहां से आगर सड़क गई मील ३२, और आगर से उज्जैन मील ४२। दूसरी आकोदीया मील १७।

(३७) पचोर—यहां से सुजालपुर सड़क गई मील २२, सुजालपुर गांव और स्टेशन है। गांव और स्टेशन पर मील कर २० श्रावक के घर, २ मंदिर और २ उपाश्रय है।

(३८) व्यावरा—गांव वड़ा और राजगढ स्टेट का है।

व्यावरा से	वम्बई	माइल	४८२
,,	शिवपुरी	,,	१२०
,,	राजगढ	,,	१४
,,	भोपाल	,,	७१ पक्की सड़क है।

पत्ता—शेठ केशरीचन्दजी मु. व्यावरा (मालवा)

व्यावरा से शिवपुरी माइल १२० (मालवा)

दे. नों. नं.	गांव के नाम	माइल	श्रा० घर	मंदिर	उपाश्रय.
३९	घोडापछाड़	९॥।	०	०	डाकबंगला
	कोटड़ा	४।	स्था०१	०	श्रा० घर
	पेंची	२	३	१	१
	वीनागंज	४	१	०	धर्मशाला
	पार्वती	१३॥।	दिगं०२	०	सरकारी मकान
४०	आवन	४॥	०	०	डाकबंगला
४१	रुटियाई	९	०	०	धर्मशाला

४२	गुणा	१२॥	३	०	वगीचा
४३	भदोरा	११॥	०	०	डाकवगला
४४	म्याना	६।	स्या०१	०	श्रा० घर
	बदरवास	११॥	दिग०६	०	डाकवंगला
	लकवास	९।	दिगं०३	०	महादेव
	× कोलारस	६॥	दिग. ४०	०	दिग, जैन मदिर
	पारोरा	५	०	०	डाकवंगला
४५	०	७।	०	०	कोठी
४६	शिवपुरी	२॥	२०	२	२

(३९) घोडापछाड—नदी के पास बिल्कुल छोटासा गाव है। यहा राजगढ रियासत पूरी होती है और ग्वालियर स्टेट शुरु होता है। यहा पर राजगढ़ और ग्वालियर का जकातनाका है।

(४०) आवन—सडक से बाये हाथ दो फर्लांग दूर है। सडक पर डाकवंगला है।

(४१) रुठियाई—गाव और स्टेशन है। धर्मशाला स्टेशन के उपर है। गाव में दिगम्बरों के छ घर हैं।

(४२) गुणा—शहर और स्टेशन है। गुणा की छावणी भी है। शेठ रतनमलजी के बगीचे में ठहरना चाहिये।

× मुनिराज श्री प्रभाकरविजयजी का दीक्षास्थान स १९८३ के चैत वदी षष्ठी।

(४३) भदोरा—गांव जागीरदार का है। डाकबंगले में जागीरदार की इजाजत से ठहरना चाहिये।

(४४) स्याना—गांव जागीरदार का है। सड़क पर जैन धर्मशाला है। सड़क से गांव एक मील दूर है।

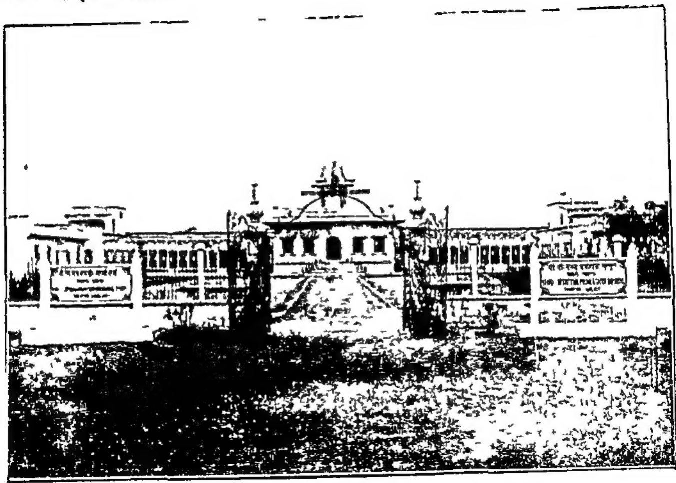
(४५)—गणपतराव भैया की कोठी में ठहरना चाहिये।

(४६) शिवपुरी (सीपरी)—शहर और स्टेशन है। यह ग्वालियर सरकार का सेनीटेरियम है। यहां पर गुरुदेव शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीविजयधर्मसूरि महाराज का स्वर्गारोहण हुआ है। संवत् १९७८ के भाद्रपद शुक्ल १४। यहांपर आप की बड़ी भारी छत्री बनी हुई है अलावा यहाँपर आपकी संस्थापित श्री वीरतत्त्वप्रकाशक मंडल (पाठशाला) है, कि जहांपर आज बडे २ स्कोलर अध्ययन करते है। यशोज्ञानमंदिर है। भदैयाकुंड, चाँदपाटा राज्यमाताजीकी छत्री, बाणगंगा, कौवत का जंगल, ग्वालियरनरेश की छत्री आदि देखने योग्य स्थान है। शिवपुरी से झांसी माइल ६१। झांसी से कानपुर मा० १३९। वहां से बनारस मा० २०१, पक्की सड़क है।

पत्ता—शेठ टोडरमल भांडावत, शिवपुरी (ग्वालियर)

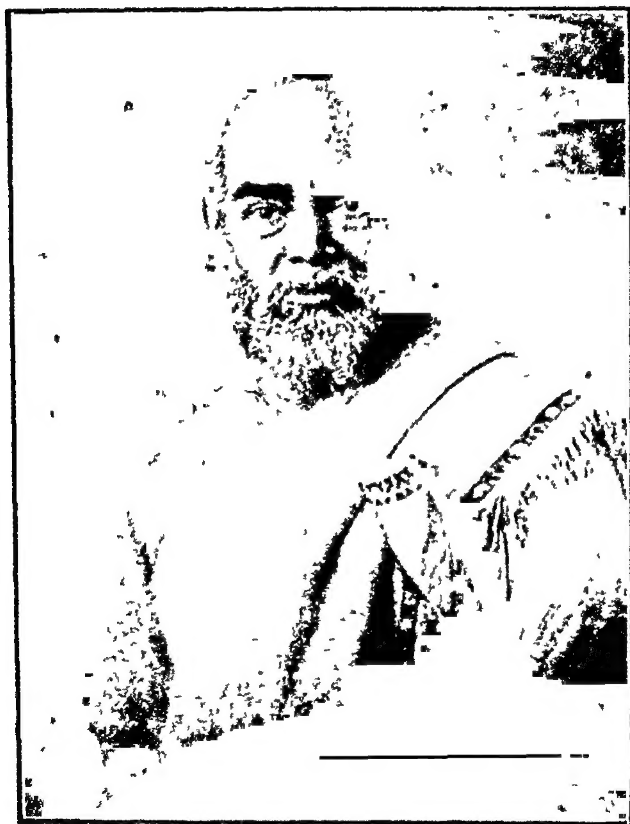
शिवपुरी से बेलनगंज आगरा—माइल १४४ (यू०पी०)

दे.नों.नं.	गांव के नाम.	माइल.	श्रा० घर.	मंदिर.	उपाश्रय.
४७	सुराखोह	६	०	०	डाकबंगला



समाधिमंदिर ऑफ विजयधर्मसूरि

जगद्विख्यात—



महात्मा श्री विजयधर्मसूरि

४८	सतनवाड़ा	६॥	दि० २	०	,,
४९	गाराघाट	८॥	०	०	,,
५०	चोरपुरा	६॥	दि० ३	०	,,
५१	मोहना	११॥	दि० ८	०	,,
५२	रेहम्ट चीराई	७॥	त्रि० ३	०	जैन दि०मन्दिर
५३	पनीयार	१५॥।	०	०	०
५४	लश्कर(ग्वालियर)	१२	७५	२	२
५५	वामोर	९॥	०	०	बडी हवेली
५६	मुरेना	१५।	दि० १५	०	डाँकबंगला
५७	भाणगीर	१४	०	०	,,
५८	मानिया	११॥।	०	०	,,
५९	याद	१७॥	०	०	बगीचा
६०	आगरा	८	५०	९	१
६१	वेलनगंज	१	१०	१	१

(४७) भुराखोह—गाँव नहीं है । यह रमणीय स्थान है, यहाँ प्राकृतिक झरणाँ, गुफाएँ और झाडियों का दृश्य बहुत अच्छा है। यहा पर डाकबंगले के अलावा और कितनेक स्थान स्टेट के तरफ से बने हुये हैं । यह स्थान सडक से दाहिने हाथ दो फलांग दूर है । यहा मे लश्कर तक पहाडी जगल है, जानवरों का भय रहता है ।

(४८) *सतनवाडा—गांव और स्टेशन है। गांव सडक से दाहिने हाथ दो फलांग दूर है, वहां से नरवर पक्की सड़क गई है, माइल १६।

(४९) गाराघाट—यह गाँव नहीं है। डाकबंगला ही है।

(५०) चोरपुरा—गाँव और स्टेशन है।

(५१) मोहना—गाँव और स्टेशन है। गांव और स्टेशन डाकबंगले से एक मील आगे सड़क के ऊपर ही है।

(५२) रेहन्टचीराई—गांव और स्टेशन है।

(५३) पनीयार—स्टेशन है। गांव सड़क से आधा मील दाहिने हाथ दूर है।

(५४) लश्कर—सिंधिया सरकार की राज्यधानी का शहर और स्टेशन है। विजयधर्मसूरि स्मारक पाठशाला व कन्या-शाला है, वहां पर किल्ला, म्यूझियम, फूलबाग, मोतीबाग, कोलेज, होस्पटिल, राजमहेल व दिगम्बर जैन मन्दिरादि देखने योग्य हैं।

ग्वालीयर से	भींड	माइल	९०
,,	झांसी	,,	६०
,,	इटावा	,,	६८

पत्ता—सेठ ऋद्धराजजी धाड़ीवाल,
c/o सराफा लश्कर–ग्वालियर

* लेखक का दीक्षा स्थान. सं. १९८३ के फाल्गुन वदी सप्तमी।